क क्व क्श क्ष ख्य ख्र ख्व ग्ग ग्घ ग्म

हिंदी लिपि

भाग 3

घ्र ङ्क

ज्ज ज्य

ट्ठ ठ्य

त्त त्य त्न त्प त्म त्र त्स थ्व द्द द्र

न्थ न्द न्न न्य प्प प्य प्र प्ल प्स

ब्र भ्य भ्र म्प म्फ म्ब म्म म्य म्ल

र्छ र्ज र्ट

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

र्ब र्भ र्म र्य र्व र्श र्ष र्स ल्क ल्ल

Hindi Lipi Bhag-3

Book No. 39 (BVP)

हिंदी लिपि : भाग 3

सलाहकार समिति

डॉ. गोपाल शर्मा

डॉ. रमानाथ सहाय

डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

सामग्री निर्माण योजना संयोजन

डॉ. न. वी. राजगोपालन

लेखक

श्री विजयराघव रेड्डी

आमुख

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के स्कूली छात्रों के उपयोग के लिए हिंदी की शिक्षण सामग्री निर्माण योजना के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की पाठ्य, अभ्यास और संदर्भ पुस्तकों तथा अध्यापक निर्देशिकाओं के निर्माण और प्रकाशन का कार्य हाथ में लिया है। इस योजना में हिंदी लिपि-लेखन की पाँच अभ्यास-पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। इस क्रम की यह तीसरी अभ्यास-पुस्तक है। इसमें मात्राओं से युक्त व्यंजन, दो या अधिक वर्णों से युक्त संयुक्त व्यंजन तथा उन से बने शब्दों और वाक्यों के लेखन के लिए चौदह उपयोगी और वैज्ञानिक रीति से निर्मित पाठ दिये गये हैं।

आशा है कि हिंदी लिपि भाग 1 और 2 के समान यह पुस्तक भी अवश्य ही उपयोगी प्रमाणित होगी।

(गोपाल शर्मा)
निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान

माता	पिता	चाचा	चाची	दादा	दादी	नाना	नानी

बाल	तेल	दिल	दिमाग	कान	नाक	आँख	आँसू

एक	दो	तीन	चार	पाँच	छह	सात	आठ	नौ	दस

घास	घृणा	रेल	थैला	ढोल	खून	रूप	रुपया

हस	हंस	हँस	आधी	आँधी	पूछ	पूँछ	मूँछ

ख्याति	राज्य	उत्सव	त्याग	आत्मा	ग्वाला	कुत्ता

ग्यारह	तेरह	चौदह	पन्द्रह	सोलह	सत्रह

इक्कीस अच्छे बच्चे अभी यहाँ आये थे।

पृथ्वी	ध्वनि	चप्पल	तिब्बत	सभ्य	अन्धकार	
सुन्दर	जन्म	ब्याज	व्यय	प्यार	प्यास	उत्तर
अल्ला	कष्ट	श्मशान	पश्चिम	विश्वास	मनुष्य	

तुम्हारा व्यवहार स्कूल में हमेशा ठीक रहता है।

पक्का	मक्खन	रिक्शा	क्या	हुक्म	टक्कर

चिट्ठी	पाठ्यपुस्तक	विद्या	विद्वान	चिह्न	अड्डा

अँग्रेज़ी	ख्रीष्ट	चर्च	क्रास	ब्रह्मा	ईश्वर	व्रत

वर्षा में फ़र्श पर मुर्गे जोर जोर से बोल रहे हैं।

भारत हमारा देश है। इसमें बाईस राज्य और नौ केंद्र शासित क्षेत्र हैं। वे हैं——आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल तथा अंदमान और निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश, चंडीगढ़, दादरा और नगरहवेली, दिल्ली, गोआ, दमण और दीव, लक्षद्वीप, मिज़ोउरम और पांडिचेरी।

हमारे देश में बहुत पहाड़ी इलाके हैं। वहाँ की महिलाओं को दिन भर कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। उन्हें बड़े सबेरे जाग कर सारे घर के लिए खाना पकाना पड़ता है। उन्हें पास की नदी या झरने से पानी भर के लाना पड़ता है और लकड़ी भी काटनी पड़ती है। परिवार के दूसरे लोगों के साथ महिलाएँ भी खेतों पर काम करती हैं। खेतों से जब आदमी लौट कर आते हैं उस समय महिलाओं का काम और भी बढ़ जाता है। लोक-कलाओं और लोक-गीतों में निपुणता हासिल करने के अलावा उनको पुरुषों के काम-धंधों में हाथ बँटाना लाजिमी होता है।

देश की जनसंख्या अब अट्ठावन करोड़ से अधिक हो गयी है। इसमें अज्ञानता, अशिक्षा और अस्वस्थता के शिकार निम्न स्तर के जीवन यापन करने वाले इंसानों की निश्चित संख्या अभी ज्ञात नहीं है। हमारे बीच कुछ समाज विरोधी तत्व भी काम कर रहे हैं। उन्नति के रास्ते में उत्पन्न इन विघ्न बाधाओं की परवाह किये बगैर जनसाधारण की सेवा में संलग्न पुण्यात्मा अब ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते। फिर भी हमें हिम्मत नहीं हारनी होगी। देश में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के लिए कृत-संकल्प अपनी सरकार के हाथ बँटाने के लिए हम सबको सदा तैयार रहना चाहिए। तभी हमारा देश विश्व में ऊँचा उठ सकता है।

जगन्नाथ : आइए ! विश्वनाथ जी, आइए ! बताइए, कैसे तकलीफ़ की आपने ?

विश्वनाथ : एक कष्ट देने आया हूँ । मुझे एक हफ़्ते के लिए आपकी कार चाहिए ।

जगन्नाथ : लेकिन भाई, वह तो खराब पड़ी है ।

विश्वनाथ : क्या हुआ ? कोई एक्सीडेंट तो नहीं हुआ ?

जगन्नाथ : ऐसा ही समझ लीजिए । अब इस पृथ्वी पर आराम से जीना मुश्किल है ।

विश्वनाथ : आखिर बात क्या है ? जगन्नाथ जी बताइए तो सही ।

जगन्नाथ : बृहस्पतिवार की बात है । बच्चे कार से अप्सरा सिनेमा जा रहे थे । रास्ते में भीड़-भड़भड़ थी । उधर से एक बस तेजी से आकर टकरा गयी । बस, कार का इंजन तहस-नहस हो गया । ईश्वर की कृपा है कि बच्चे बाल बाल बच गये ।

विश्वनाथ : अरे यह ! तो बड़ा बुरा हुआ । मुझे अफ़सोस है । अच्छा । क्षमा कीजिए । नमस्कार ।

एक गाँव के मुखिया अपने घर पर बैठ कर लोगों से बातें कर रहे थे। इतने में उनके एक नौकर ने आकर उन्हें एक चिट्ठी दी। पढ़ कर मुखिया ने उच्छ्वास लिया और कहा, "देखो, हमारे गाँव में एक बुड्ढे धनाढ्य आये हुए हैं। वे अच्छे संगीतज्ञ भी हैं और विद्वान भी। उनके सत्कार के लिए हमें तुरंत बढ़िया प्रबंध करना होगा। वे हमारे गाँव वालों को संबोधित करेंगे। उनका उद्बोधन अद्वितीय रहेगा और मङ्गलकारी भी।" मुखिया की आज्ञा सुनकर गाँव के सभी लोग अपने अपने कामों में लग गये। क्षणों में गाँव का सभा-मण्डप सज गया। जब सारी तय्यारियाँ समाप्त हो गयीं तब मुखिया संगीतज्ञ को आह्वानित करने बाहर गये। आश्चर्य की बात है कि वहाँ कोई नहीं था।

असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोउरम, त्रिपुरा और मेघालय से युक्त सारे भूभाग को पूर्वांचल कहा जाता है। कई दृष्टियों से सिक्किम को भी पूर्वांचल में जोड़ा जाता है। पहले जिस इलाके को उत्तर पूर्वी सीमांत प्रदेश या नेफ़ा कहा जाता था, उसी को आजकल अरुणाचल कहते हैं। वर्ष के बारहों महीनों में हरा-भरा रहने वाले इस पूर्वांचल की प्राकृतिक सुन्दरता देखते ही बनती है। अतुल प्राकृतिक संपदा से भरा हमारे राष्ट्र का यह भूभाग सदियों से विभिन्न प्रकार की भाषाओं, जातियों एवं संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है। इस पूरे अंचल के सर्वतोमुखी विकास के लिए विगत पंचवर्षीय योजनाओं में कई नयी-नयी परियोजनाएँ कार्यान्वित की गयी हैं।

भारत में कई त्योहार मनाये जाते हैं—होली, दीवाली, बड़ा दिन, स्वतंत्रता दिवस आदि। 'बड़ा दिन' ईसाइयों का सबसे बड़ा त्योहार है। इस दिन से यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में दिन बड़े होने लगते हैं। इसे 'क्रिसमस डे' या 'एक्समस डे' भी कहते हैं। इसी दिन महात्मा ईसा मसीहा का जन्म हुआ था। चौबीस दिसंबर को 'क्रिसमस ईव' मनायी जाती है और पच्चीस दिसंबर को 'क्रिसमस डे'। इस दिन 'क्रिसमस ट्री' भी सजाया जाता है। इस दिन हर घर में बढ़िया खाना बनाया जाता है। लोग एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं। नाच गान होता है। इस दिन गिरजाघरों में विशेष प्रार्थना होती है।

हमारे देश की राजधानी दिल्ली है। यहाँ भारत के राष्ट्रपति रहते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ उप राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और अन्य केंद्रीय मंत्री भी रहते हैं। हर मंत्री का दिल्ली में सचिवालय है। यहाँ पार्लियामेंट या संसद है। संसद के दो अंग हैं--लोक सभा और राज्य सभा। संसद के सदस्य ही देश के लिए कानून बनाते हैं। दिल्ली में देश का सबसे बड़ा न्यायालय है। उसे सर्वोच्च न्यायालय कहा जाता है। दिल्ली में लाल किला, कुतुबमीनार, विज्ञान भवन आदि इमारतें और राजघाट, शांतिवन आदि हैं। दिल्ली देखने के लिए देश और विदेश से हजारों लोग आते रहते हैं।

हमारे प्रथम प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू फूलों में गुलाब के फूल को और मनुष्यों में बच्चों को सबसे अधिक प्यार करते थे। वे अच्छे लेखक भी थे। 'मेरी कहानी' और 'भारत की खोज' उनकी अच्छी पुस्तकें हैं। वे देश को एकता का पाठ सिखाते थे। देश की जनता भी उन्हें बहुत प्यार करती थी। पूरा देश उनका आदर करता था। वे अपने को गांधी जी का अनुयायी मानते थे। जिस प्रकार रामकृष्ण परमहंस की आत्मा को विवेकानन्द ने अपनी दिनचर्या में उतार लिया था, उसी प्रकार महात्मा गांधी की संवेदनशीलता को, संकल्प को और आदर्शों को उन्होंने मूर्त रूप देने की भरसक कोशिश की।

राष्ट्र गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड-उत्कल-बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय-गाथा
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत - भाग्य - विधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे !!

हिंदी संख्याएँ

एक	ग्यारह	इक्कीस	इकत्तीस	इक्तालीस	इक्यावन	इकसठ	इकहत्तर	इक्यासी	इक्यानवे
दो	बारह	बाईस	बत्तीस	बयालीस	बावन	बासठ	बहत्तर	बयासी	बानवे
तीन	तेरह	तेईस	तैंतीस	तैंतालीस	तिरपन	तिरसठ	तिहत्तर	तिरासी	तिरानवे
चार	चौदह	चौबीस	चौंतीस	चौआलीस	चौवन	चौंसठ	चौहत्तर	चौरासी	चौरानवे
पाँच	पंद्रह	पच्चीस	पैंतीस	पैंतालीस	पचपन	पैंसठ	पचहत्तर	पचासी	पचानवे
छह	सोलह	छब्बीस	छत्तीस	छियालीस	छप्पन	छियासठ	छिहत्तर	छियासी	छियानवे
सात	सत्रह	सत्ताईस	सैंतीस	सैंतालीस	सत्तावन	सड़सठ	सतहत्तर	सत्तासी	सत्तानवे
आठ	अठारह	अट्ठाईस	अड़तीस	अड़तालीस	अट्ठावन	अड़सठ	अठहत्तर	अठासी	अट्ठानवे
नौ	उन्नीस	उन्तीस	उन्तालीस	उनचास	उनसठ	उनहत्तर	उनासी	नवासी	निन्यानवे
दस	बीस	तीस	चालीस	पचास	साठ	सत्तर	अस्सी	नब्बे	सौ

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९	६९	७९	८९	९९
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००

हिंदी लिपि : भाग 3

(Hindi Script : Workbook—Part 3)

प्रथम संस्करण—मार्च 1976

मूल्य : रु० 1·50

प्रकाशक और वितरक

केंद्रीय हिंदी संस्थान

आगरा 282 005

मुद्रक : मेहरा आफसेट प्रेस, आगरा–*282 003*

क्क क्ख क्त क्य

ग्य ग्र ग्ल ग्व घ्न

ङ्ख ङ्म च्च च्छ

ज्व ञ्ञ ञ्ज ञ्झ ट्ट

ड्ड ड्ढ ड्य ण्ठ ण्ड

द्ध द्भ द्व ध्य

फ़्त ब्द ब्ब ब्भ

य्य र्क र्ख र्ग र्घ

र्ट र्ण र्त र्थ र्ड़ र्ध